पाठ - 9

वैश्वीकरण

29/11/2022

Date
Page

(1.) वैश्वीकरण की अवधारणा :—

⇒ एक अवधारणा के रूप में वैश्वीकरण का अभिप्राय प्रवाह से है।

⇒ प्रवाह कई प्रकार के हो सकते हैं — विश्व के एक हिस्से के विचारों का दूसरे हिस्से में पहुँचना, पूँजी का एक से अधिक स्थानों पर जाना, वस्तुओं का कई देशों में पहुँचना व उनका व्यापार तथा उत्तम आजीविका की तलाश में विश्व के विभिन्न भागों में लोगों का आवागमन।

⇒ इस प्रकार के प्रवाहों की निरन्तरता से विश्वव्यापी परस्परिक जुड़ाव उत्पन्न हुआ है जो आज भी कायम है।

⇒ वैश्वीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है। इसके राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आयाम हैं।

⇒ वैश्वीकरण की प्रवृत्ति 20 वीं सदी के अन्त में प्रबल हुई तथा 21 वीं शताब्दी के शुरू में इसने ठोस आधार प्राप्त किया।

⇒ हालाँकि वैश्वीकरण के लिए सिर्फ कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं है फिर भी सूचना प्रौद्योगिकी का विकास अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

⇒ वैश्वीकरण प्रत्येक अर्थ में सकारात्मक ही नहीं होता बल्कि लोगों पर इसके दुष्प्रभाव भी पड़ते हैं।

(2.) वैश्वीकरण के कारण :—

⇒ विचार, पूँजी, वस्तु और लोगों की विश्व के विभिन्न भागो में आवागमन की सरलता प्रौद्योगिकी के विकास के कारण सम्भव हुई है।

⇒ संचार क्षेत्र में क्रान्ति लाने वाले साधनों मे टेलीग्राफ, टेलीफोन तथा माइक्रोचिप के नवीनतम आविष्कार का उल्लेख किया जा सकता है।

⇒ विश्व के विभिन्न देशों पर वैश्वीकरण के राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव पड़े हैं।

(3.) राजनीतिक प्रभाव :—

⇒ वैश्वीकरण के कारण राज्य की क्षमता में कमी आती है। लोक-कल्याणकारी राज्य के स्थान पर अब बाजार आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रमुख निर्धारक है।

⇒ कुछ अर्थों में वैश्वीकरण के फलस्वरूप राज्य की शक्ति में वृद्धि हुई है। अब राज्य अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के बल पर अपनी जनता के बारे में सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं। इन सूचनाओं के आधार पर राज्य अच्छे ढंग से कार्य कर सकता है।

(4.) आर्थिक प्रभाव :—

⇒ वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभाव को आर्थिक वैश्वीकरण के नाम से भी जाना जाता है। आर्थिक वैश्वीकरण में विश्व के विभिन्न देशों के मध्य आर्थिक प्रवाह तीव्र हो जाता है।

⇒ वैश्वीकरण के कारण सम्पूर्ण विश्व में वस्तुओं के व्यापार में वृद्धि हुई है।

⇒ वस्तुओं के आयात-निर्यात एवं पूँजी के आवागमन पर राज्यों के प्रतिबन्ध में कमी आयी है।

⇒ वैश्वीकरण के कारण विश्व के अलग-अलग भागों में सरकारों ने एक जैसी आर्थिक नीतियों को अपनाया है, लेकिन विश्व के विभिन्न भागों में इसके परिणाम अलग-2 हुए हैं।

⇒ आर्थिक वैश्वीकरण के कई नकारात्मक परिणाम हमारे समक्ष आए हैं, जिनमें प्रमुख है — सम्पूर्ण विश्व में जनमत का बड़ी गहराई से विभाजित हो जाना, सरकार द्वारा अपनी जिम्मेदारियों से अपने हाथ खींचना है।

⇒ वैश्वीकरण के विरोध में अनेक आन्दोलन संचालित हुए हैं। ऐसे आन्दोलनों ने बलपूर्वक किए जा रहे वैश्वीकरण पर रोक लगाने की आवाज लगायी है क्यों कि इससे निर्धन देश आर्थिक रूप से बर्बादी के कगार पर पहुँच जायेंगे।

⇒ कुछ अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक वैश्वीकरण को पुनः उपनिवेशीकरण की संज्ञा दी है।

⇒ आर्थिक वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं के समर्थकों का तर्क है कि इससे समृद्धि बढ़ती है, व्यापार में वृद्धि होती है जिनका सम्पूर्ण विश्व को लाभ मिलेगा।

⇒ वैश्वीकरण के मध्यमार्गी समर्थकों का मत है कि वैश्वीकरण ने हमारे समक्ष चुनौतियाँ प्रस्तुत की है जिनका सजग होकर पूरी बुद्धिमानी से सामना करना चाहिए।

(5.) सांस्कृतिक प्रभाव :—

⇒ वैश्वीकरण सांस्कृतिक समरूपता लाता है, लेकिन इस सांस्कृतिक समरूपता में विश्व संस्कृति के नाम पर शेष विश्व पर पश्चिमी संस्कृति थोपी जा रही है।

⇒ वैश्वीकरण के सांस्कृतिक प्रभाव का सकारात्मक पक्ष यह है कि कभी - कभी बाहरी प्रभावों से हमारी पसन्द - नापसन्द का दायरा बढ़ता है तो कभी इनसे परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों को छोड़े बिना संस्कृति का परिष्कार भी होता है।

⇒ वैश्वीकरण के दो पहलू है।(सांस्कृतिक) इसका एक प्रभाव जहाँ सांस्कृतिक समरूपता है तो दूसरा प्रभाव सांस्कृतिक विभिन्नीकरण है।

(6.) भारत और वैश्वीकरण :—

⇒ भारत ने सन् 1991 में वित्तीय संकट से उबरने एवं उच्च आर्थिक वृद्धि दर प्राप्त करने के लिए आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया प्रारम्भ की।

⇒ इसके अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों पर आयद (लागू) बाधाएँ हटायी गयी। इन क्षेत्रों ~~में~~ में व्यापार और विदेशी निवेश भी शामिल थी।

(7.) वैश्वीकरण का प्रतिरोध :—

⇒ वैश्वीकरण के दक्षिणपंथी आलोचक इसके राजनीतिक, आर्थिक, एवं सांस्कृतिक प्रभावों को लेकर चिन्तित है।

⇒ राजनीतिक अर्थों में उन्हें राज्य के कमजोर होने की चिन्ता है। इनका मत है कि कम से कम कुछ क्षेत्रों में आर्थिक आत्मनिर्भरता व संरक्षणवाद का दौर पुनः स्थापित हो तथा सांस्कृतिक सन्दर्भ में इनकी चिन्ता है कि परम्परागत संस्कृति को हानि होगी और लोग अपने प्राचीन जीवन मूल्य व तौर-तरीकों को खो देंगे।

⇒ अनेक वैश्वीकरण विरोधी आन्दोलन वैश्वीकरण की धारणा के विरोधी नहीं है, बल्कि वैश्वीकरण के किसी विशेष कार्यक्रम के विरोधी है जिसे वे साम्राज्यवाद का एक रूप मानते हैं।

⇒ 1999 में सिएटल में विश्व व्यापार संगठन की बैठक हुई यहाँ बड़े पैमाने पर विरोध-प्रदर्शन हुए।

⇒ नव-उदारवादी वैश्वीकरण का विरोध का एक विश्व-व्यापी मंच "वर्ल्ड सोशल फोरम" (WSF) है। इस मंच के तहत मानवाधिकार — कार्यकर्ता, पर्यावरणवादी, मजदूर, युवा और महिला कार्यकर्ता एकजुट होकर नव-उदारवादी वैश्वीकरण का विरोध करते हैं।

⇒ (i) वर्ल्ड सोशल फोरम की पहली बैठक 2001 में ब्राजील के पोर्तो अलगेरे में हुई।
(ii) 2004 में इसकी चौथी बैठक मुंबई में हुई थी।
(iii) 2018 में, मार्च में, ब्राजील में बैठक हुई थी।

(8.) भारत और वैश्वीकरण का प्रतिरोध :—

⇒ भारत में वैश्वीकरण का विरोध कई क्षेत्रों में हो रहा है। इनमें वामपंथी, राजनीतिक दल, इंडियन सोशल फोरम,

औद्योगिक श्रमिक एवं किसान संगठन उन्नति है।

⇒ औद्योगिक श्रमिक और किसानो के संगठनों ने बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रवेश का विरोध किया है। कुछ वनस्पतियों मसलन 'नीम' को अमरीकी और यूरोपीय फर्मों ने पेटेन्ट कराने के प्रयास किए। इसका भी कड़ा विरोध किया गया।

⇒ विदेशी टी.वी. चैनलों से लेकर वैलेन्टाईन-डे मनाने तथा स्कूल-कॉलेज के खान-खानाओं की पश्चिमी पोशाकों के लिए बढ़ती अभिरुचि तक का विरोध शामिल है।

★ ⇒ बहुराष्ट्रीय निगम :— वह कम्पनी जो एक से अधिक देशो में एक साथ अपनी आर्थिक गतिविधियाँ (पूंजी निवेश, उत्पादन, वितरण या व्यापार) चलाती है।

⇒★ मैक्डोनाल्डीकरण :— इसका तात्पर्य है कि संसार की विभिन्न संस्कृतियाँ अब अपने आप को प्रभुत्वशाली अमेरिकी ढर्रे पर ढालने लगी है।

⇒★ सांस्कृतिक समरूपता :— इसका तात्पर्य विश्व संस्कृति के नाम पर पाश्चिमी संस्कृति थोपी जा रही है। यह खान-पान, पहनावे तथा सोच पर देखा जा सकता है।

⇒★ व्यापार सन्तुलन :— किसी देश के कुल आयात तथा निर्यात मूल्यों का अन्तर व्यापार सन्तुलन है।